रात्रीक्लास 7.3.68 ओमशांति मन्मनाभव

अभूल तो बनना है। भूल कराती है रावण। सभी भूले हुए हैं। भक्ति भी भूले हुए करते हैं। जानते नही कि हम किसकी भक्ति करते हैं। भक्ति है जैसे दुबन। जहां कैलराठी जमीन और सागर का पानी होता है उनको दुबन कहते हैं। भक्तिमार्ग भी जैसे कि दुबन है। शोभनीक बहुत हैं। तो और ही फंस पड़ते हैं। निकालने में तुम बच्चों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है। तुम बच्चों को अभी मिला है सोझरा। ऋषि–मुनि आदि भी कहते थे नेति2। अभी तुमको तो बाप मिला है। तुम सभी को बाप का और रचना के आदि, मध्य ,अंत का परिचय देते हो। अभी तुम अपने लिए राजधानी स्थापन करते हो। तुम सभी एक ही परिवार के हो। बाप आकर पढ़ाते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। कृष्ण की भी आत्मा यहां है ना। तो तुम सभी उनके परिवार के हो। काला और गोरा भी कृष्ण को कहते हैं। ल0ना0 को भी गोरा और सांवरा दिखाते हैं। सांवरा सभी को बनाते हैं। शिवबाबा का भी काला लिंग बनाते हैं। पत्थर तो मिनती है। श्रीनाथ, काली का कितना काला चित्र है तो पत्थर काला होता है। पानी भी चढ़ता है तो तेल भी चढ़ता है तो जरूर ऐसा काला पत्थर होगा। अभी बच्चों ने समझा है ज्ञान क्या है ,भक्ति क्या है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते पढ़ाते भी रहो। याद भी

7.3.68 2

करो। दैवी गुण भी धारण करो। शास्त्रों में यह बातें नहीं हैं । बाप ही आकर सभी शास्त्रों का सार सुनाते हैं। दिखाते भी हैं ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र। परमात्मा फिर विष्णु को समझते हैं। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा समझाते हैं। ऐसे ही कहेंगे। विष्णु का नाम नहीं लेंगे। एक ही शिव परमात्मा है जो पुनर्जन्म नहीं लेते। अभी ब्रह्मा कहां से आया? कैसे जन्म लिया? यह एडाप्ट हुआ। जन्म की बात नहीं। कृष्ण तो मां के पेट से हुआ। शिव तो है निराकार। ब्रह्मा तो शरीर का नाम है। वह किससे पैदा हुआ? शरीरधारी है ना। शास्त्रों में कुछ भी वर्णन नहीं है। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के अंत में मैं इनमें प्रवेश करता हूं। तुमको भी अभी ज्ञान हुआ है। वह तो जरूर मूंझेंगे। ब्रह्मा के नाम पर मूंझने कारण एक चित्र में ल0ना0 के उपर सिर्फ शिव को दिखाया था। शिवबाबा ने यह स्वर्ग रचा। इनको (ल0ना0) को भी रचा। थोड़े ही समय के लिए वह चित्र बना दिया था। कृष्ण का चित्र तो बहुत अच्छा है ;परंतु 84जन्म की कहानी देखते हैं तो वह निकाल (देते) हैं। बाकी कृष्ण को रख देते हैं। भक्तिमार्ग में ढेर के ढेर चित्र हैं। अभी समझते हैं उंच ते उंच भगवान है। फिर है ल0ना0, सीता–राम। ब्रह्मा तो थोड़ा ही टाइम है ना। तुम बच्चों को अजमेर के मंदिर में जाकर पूछना चाहिए। पुष्कर वाले बहुत करके शास्त्र ही सुनाते हैं। वह ब्राह्मण श्राद्ध खाने वाले होते हैं। वह हैं शास्त्र सुनाने वाले। तो बाप यह सब समझाते रहते हैं। तुम हो ब्राह्मण। मुख्य समझाया जाता है। दो बाप जरूरी है। यह ड्रामा ही सारा वंडरफुल बना हुआ है। सतयुग में हम बाप को याद नहीं करते हैं। यह अभी अनुभ प्रैक्टिकल की बातें हैं। वह हैं शस्त्रों की सुनी–सुनाई बातें। अभी बाप कहते हैं इसमें मेहनत है। शरीर का भान भी छोड़ दो। बेहद के बाप को हम क्यों नहीं याद करेंगे?परंतु माया भुलाय देती है। जो बात बीती उनका चिंतन न करना चाहिए। .....यह न करना चाहता था। बीती को चिंतन नहीं। इसलिए कदम2 पर सावधानी मिलती है। जिस बाप से विश्व का स्वराज्य मिलता है उस बाप की याद क्यों नहीं करते हैं? विश्व में जो मालिक थे वह पवित्र थे। हमको भी जरूर पवित्र बनना है। जन्म–जन्मांतर के पाप रहे हुए हैं। वह काटनी है। बाप कहते हैं बच्चे जीते रहो। शरीर छोड़ा तो कमाई चट हो जावेगी। बहुत गई थोड़ी रही. .....बाबा को जल्दी याद करें। तीव्रवेगी जो अच्छे2 होंगे वह पुरुषार्थ जरूर करेंगे। बहिन–भाई के सम्बंध में भी बहुत भूलें होती हैं। रुहानी आत्मा देखने से कुछ नहीं होगा। हम आत्मा हैं। भल भाई–भाई को देखो। मेहनत है ना। देही अभिमानी बनना है। भाई–भाई हैं तब

ही बाप से वर्सा मिलेगा। सब्जेक्ट गुह्य होती जाती है। मेहनत बढ़ती जाती है। बच्चे समझते हैं हम अपन को आत्मा समझ उनको समझते हैं। इस परिवार का न होगा तो सुनेगा भी कैसे? भक्ति मार्ग में अनेक–अनेक बातें हैं। इसमें हैं एक। अपन को आत्मा समझे तब ही वर्से का लायक समझे। बहिन–भाई को तो वर्सा नहीं मिलता है। कहते भी हैं हम सभी भाई–भाई हैं। रसियन–इंडियन भाई2 हैं। हम सभी आत्माएं बच्चे तो एक के ही हैं। बहिन–भाई से समझ नहीं सकते हैं। हम एक ही बाप के बच्चे हैं। यह सभी बातें तुम जी जानते हो। भक्तिमार्ग की शिवलिंग और ज्ञान मार्ग के शिवलिंग ही अलग हैं। यह बाप ही जानते हैं और बतलाते हैं। यह खेल भी बंद होनी नहीं है। रचता और रचना तो है ही है। सृष्टि चक्र लगाती रहती है। कब2 . ....पूछते हैं भगवान ने आवागमन का चक्र क्यों रचा? उनको क्या मजा आता है? यह बना बनाया खेला है। तुम छूट नहीं सकते हो। अच्छा ,गुडनाइट, नमस्ते। ओमशांति।